JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सांस्कृतिक संघर्ष में महिलाएं

डॉ० मन्जु
एसोसिएट प्रोफेसर
दयाल सिंह सांध्य महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

Abstract (सारांश):– सैमुअल पी. हंटिगटन, क्लैश ऑफ सिविलाइजेशन में शीत युद्ध पश्चात् सांस्कृतिक युद्धों की आंशका बताते है। सांस्कृतिक युद्ध विश्व इतिहास की प्रमुख घटनाओं में से रहा है। भारत में ये सांस्कृतिक संघर्ष विदेशी आक्रमणकारी के आगमन से ही माने जाते है। इन संघर्षों में सबसे दयनीय स्थिति में महिलायें रही है।

Keyword (सकेत शब्द)– सांस्कृतिक संघर्ष, विदेशी आक्रमणकारी, संघर्षों में महिलाएं, सांस्कृतिक अपमान की पर्याय महिलाएं, महिलाओं द्वारा शांति स्थापना, भविष्य की ओर।

मानव विकास क्रम में भिन्न–भिन्न संस्कृतियों व समाजों का निर्माण इतिहास का प्रमुख विषय रहा है। वाद, प्रतिवाद व संवाद जैसे चरणों से गुजरते हुए अन्तर्राष्ट्रीय मानचित्र पर कई प्रकार की संस्कृतियों का उदय तथा पतन भी हुआ है। दूसरे शब्दों में कहे तो इतिहास में ढेरो प्रकार के जातिए, नस्लीय भाषायी व धार्मिक संघर्ष देखे गए हैं, जिन्हें सांस्कृतिक युद्ध व सांस्कृतिक संघर्ष भी कहा जा सकता है।

सांस्कृतिक युद्ध (संघर्ष) को सामान्य संदर्भ में दो विपरीत सामाजिक समूहों उनके विश्वासों मूल्यों व प्रथाओं के मध्य संघर्ष व प्रभुत्व प्राप्ति का तरीका माना जाता रहा है। युद्ध किसी भी प्रकार के हो, वे सिर्फ विनाशकारी ही होते हैं। जिसमें युद्ध हारने व युद्ध जीतने वाला दोनों ही वास्तव में हार जाते हैं। वे हारते है अपनी अर्थव्यवस्था, अपनी सामाजिक संस्थाये, अपने राजनैतिक संगठन तथा मानवीय क्षति तथा इसके साथ ही उन मनुष्यों का शारीरिक मानसिक व भावनात्मक विनाश भी हो जाता है। युद्धों का इतिहास पुरुषों के शौर्य व वीरगाथा का इतिहास रहा है। एक ऐसा वर्ग भी है जिसके हिस्से में सिर्फ और सिर्फ हानि, पतन व नुकसान ही आता है तथा वह वर्ग है– महिला वर्ग।

जितनी अमानवीयता महिलाओं को सहनी पड़ती है, उतनी शायद पुरुषों को नहीं। इसी तथ्य को यदि भारतीय संदर्भ में देखा जाए तो विविध संस्कृति के चलते हुए विभिन्न सांस्कृतिक संघर्षों ने महिलाओं को हर बार लज्जित किया है। बलात्कार, हत्या या जबरन विवाह सांस्कृतिक युद्धों की परिणीती रही है।

जहाँ भारतीय वैदिक संस्कृति भारतीय महिलाओं को पुरुषों के ही समकक्ष मानते हुए उन्हें हर प्रकार के अधिकारों से शोभित करती थी, वहीं बार–बार होने वाले आक्रमणों ने भारतीय परिस्थितियों को बदल दिया। भारत की वैभवशाली भूमि ने सदैव विदेशियों को अपनी ओर आकर्षित किया है, जहाँ कुछ विदेशियों ने भारत की अपना घर बना इसकी खूबसूरती को ओर बढ़ाया, वही कुछ ऐसे ही विदेशी रहे (जिन्हें हम आक्रमणकारी भी कह सकते है) जिन्होंने इसकी सुन्दरता को बार–बार नष्ट करने का प्रयास किया। संक्षेप में निम्न प्रकार से उनका विवेचन किया जा सकता है–

1. मुहम्मद बिन कासिम ने 711 में सिंध हमला किया, जिसका एकमात्र उद्देश्य धार्मिक उत्साह, साम्राज्य विस्तार तथा धन का लालच था। मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध व मुल्तान को अपने अधीन किया, लेकिन वह इससे आगे नहीं बढ़ पाया क्योंकि अरबों की प्रशासनिक अक्षमता और भारत में शक्तिशाली राजपूत राज्यों का अस्तित्व इसके मार्ग की समस्याएं थी, लेकिन अब भारत पश्चिमी दुनिया के संपर्क में आना शुरू हो गया था।

2. महमूद गजनबी (तुर्की) – हेनरी इलियट बताते हैं कि महमूद गजनबी ने भारत पर सत्रह बार आक्रमण किया। पहला हमला 1000 ई. में हुआ था, तथा दूसरा 1001 ई. में। यहाँ वैहद की राजधानी तक आकर, खूब लूटपाट की तथा हिंदू राजा जयपाल को 25 हाथियों और 2,50,000 दीनार प्राप्त कर रिहा कर दिया।

– 1004 में महमूद ने पुनः आक्रमण किया और भेरा पर अपना कब्जा किया।

– 1006 में मुल्तान पर कब्जा किया।

– 1008 में मुल्तान तथा आसपास के क्षेत्रों पर कब्जा किया।

– 1009 में पुनः नगरकोट पर हमला किया तथा लूटपाट की।

– 1012 ने नंदन पर हमला किया तथा कश्मीर के इलाके में लूटपाट की।

– 1013 में हमला कर नंदन पर कब्जा कर लिया।

– 1009 में नरायणपुर के शासक को हराकर उनकी संपत्ति लूटी।

– 1014 – थानेश्वर पर हमला किया।

– 1018– गंगा यमुना दोआब पर आक्रमण किया तथा मथुरा पर हमला किया और लूट लिया। मथुरा में एक हजार समृद्धशाली हिंदू मंदिर थे जिन्हें गजनबी ने 20 दिनों तक लूटा तथा नष्ट किया। मथुरा के बाद कन्नौज को भी महमूद ने बुरी तरह लूटा।

– 1024 में महमूद काठियवाड से सोमनाथ मंदिर पहुँचा। सोमनाथ अति भव्य (सोने, चाँदी, हीरे, जवाहरात से सुशोभित) मंदिर था।

– 1025 में वह मंदिर के सामने आया जिसका विरोध किया गया, लेकिन अगले ही दिन महमूद गजनबी ने न केवल मंदिर में प्रवेश किया बल्कि बेतहाशा लूट भी की।

– 1027 में गजनबी पुनः भारत आया जिसमें उसका उद्देश्य उन जाटो को खत्म करना था, जिन्होंने सोमनाथ मंदिर की लूट के बाद वापसी में उन्हें रोकना चाहा था। 1027 में जाटों का कत्ले आम किया गया। संपत्ति को लूट लिया गया तथा महिलाओं और बच्चों को गुलाम बना लिया गया।

महमूद ने भारत पर कई बार आक्रमण किये तथा अफगानिस्तान, पंजाब, सिंध और मुल्तान को अपने अधीन किया।

3. मोहम्मद गौरीः 1175 में मोहम्मद गौरी ने मुल्तान पर आक्रमण कर उसे जीत लिया तथा 1178 में उसे गुजरात में हार का सामना करना पड़ा जिसके लिए उसने अपना मार्ग बदलकर पंजाब की तरफ से हमला करना शुरु कर दिया। 1190–91 में तराइन के पहले युद्ध में पृथ्वीरान चौहान ने गौरी को हराया लेकिन क्षमा माँगने पर उसे छोड़ दिया। लेकिन 1192 में तराइन के दूसरे युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को बन्दी बना लिया गया तथा उन्हें मार दिया गया। बाद में उनकी पत्नी व बेटियों को गुलाम बनाकर गौरी अपने साथ ले गया। 1194 में गौरी पुनः भारत आया तथा कन्नौज के शासक जयचन्द्र को मार दिया गया। 1195, 1197, 1202, 1203 में भी गौरी ने भारत पर हमले किए। तथा ओदंतपुरी के बौद्ध मठों को लूट लिया गया तथा नालंदा और विक्रमशिला को भी नष्ट कर दिया। भारत में गौरी ने बेतहाशा लूट को अंजाम दिया। मानवीय मूल्यों के साथ–साथ सांस्कृतिक धरोहर को भी बुरी तरह रौंद दिया गया।

4. महमूद गजनी – भारत में मुस्लिम शासन स्थापित करने का श्रेय तुर्कों का जाता हैं अपने पूर्ववर्ती फारसी व अरबों की तुलना में वे अधिक धार्मिक कट्टर, जाति की श्रेष्ठता में विश्वास करने वाले, इस्लाम का प्रचार करने के लिए दृढ़ संकल्प वाले लोग थे। महमूद गजनी भारत में अंदर तक प्रवेश करने वाले पहले व्यक्ति थे जो कि भारतीयों की सैन्य शक्ति को तोड़ने तथा भारतीय संपत्ति को लूटने में सफल रहे।

5. 1327 में मुहम्मद तुलगक के शासन काल में मगोलों ने आक्रमण किया।

6. तैमूर लग– 1361 में तैमूर अपने पिता की अमीर तुर्गे के की छोटी रियासत का मालिक बना, तथा तैमूर को एक सैन्य कमांडर तथा चतुर राजनयिक के रूप में जाना जाता है जिसके बल पर उसने तुर्किस्तान, अफगानिस्तान, फारस, सीरिया, कुर्दिस्तान, बगदाद, जार्जिया तथा एशिया माइनर का हिस्सा शामिल था। उसने दक्षिणी रूस तथा भारत को दिल्ली तक सफलतापूर्वक लूटा। तैमूर का भारत पर हमला करने का उद्देश्य धन लूटना तथा यहाँ की संस्कृति को नष्ट करना था।

1398 ई. में समकंरकद से शुरू करते हुए तथा सिंधु नदी को पार करते हुए पंजाब में प्रवेश किया तथा दिल्ली की ओर आते हुए उसने रास्ते में आने वाली हर चीज को नष्ट कर दिया। 18 दिसंबर 1398 को दिल्ली में प्रवेश के विरोध पर उसने हजारों लोगों की हत्या कर दी, हजारों को गुलाम बनाया तथा शहर की पूरी संपत्ति लूटी, यह काम उसने पंद्रह दिनों तक किया। वापसी में उसने हजारों गांव जला दिए, लाखों लोगों की हत्याएं की, सभी शहरों को पूरी तरह लूट दिया तथा तुगलक वंश का भी अंत कर दिया।

विल डुरैंट के अनुसार भारतीयों ने युद्ध के धार्मिक नियम बनाये हुए थे, जिसका पालन वे सम्मानजनक तरीके से करते थे। जैसे पीछे से वार न करना, जिसका वाहन टूट गया हो, उस पर वार न करना तथा जो घायल हो उसकी चिकित्सा इत्यादि करना। इसके साथ–साथ युद्ध आम आबादी, खेतों से दूर खुले मैदान में किया जाता था। भागते हुए पर कमी वार नहीं किया जाता था तथा शत्रु को पर्याप्त चेतावनी व व संधि करने के अवसर भी दिए जाते थे। मोहम्मद गौरी इन्हीं धार्मिक नियमों के चलते हर बार बच जाता था। लेकिन उपर्युकत सभी विदेशी आक्रमणकारियों ने न ही किसी युद्ध नियम का पालन किया तथा न ही विध्वंस के किसी भी रूप को छोड़ा। नरसंहार, सामूहिक, हत्यायें, बलात्कार तथा जबरन दास बना महिलाओं को यौन पूर्ति के लिए अपने साथ ले जाया गया। इन आक्रमणों से पूर्व भी भारतीय भूमि पर अनेकों युद्ध लड गए लेकिन किसी भी युद्ध में महिलाओं के प्रति ऐसे अमानीवय पक्ष नहीं देखे गए।

इन विदेशी आक्रमणकारियों ने अपनी संस्कृति को थोपने के लिए पूर्व संस्कृति का समूल विनाश करने का प्रयास किया। किसी संस्कृति को अपमानित करने के लिए उस संस्कृति की महिलाओं को अपमानित करने की पंरपरा भी इन्हीं विदेशी आक्रमणकारियों के कुकृत्यों के रूप में सामने आई। इन सभी सांस्कृतिक संघर्षों तथा महिलाओं के प्रति होने वाले अमानवीय घटनाओं का अगला चरण विभाजन तथा विभाजन से पूर्व घटित कुछ सांप्रदायिक दंगों को चिन्हित किया जा सकता है।

16 अगस्त 1946 डायरेक्ट एक्शन डे के अन्तर्गत जहां मुस्लिम हिंदू जनसंख्या ने एक–दूसरे को मौत के घाट उतारने में कोई कमी नहीं रखी, वही दोनों समुदायों ने विपरित समुदायों की महिलाओं को शर्ममार करने में स्वयं को गौरान्वित महसूस किया।

ऐसा अनुमान है कि लगभग 7500 से 100000 हिंदू मुस्लिम महिलाओं का विभाजन के दौरान बलात्कार, अपहरण व हत्यायें की गई। जैसे नौखली 1946 में हिंदू महिलाओं को अपहरण व बलात्कार का सामना करना पड़ा। इसी दौरान मुस्लिम महिलाओं ने बिहार में कुओं में कूद कर अपनी अस्मिता की रक्षा की। नवम्बर 1946 में गढ़मुक्तेश्वर में हिंदू भीड़ के द्वारा मुस्लिम महिलाओं को ना केवल नग्न कर सड़कों पर निकाला बल्कि उनका बलात्कार भी किया। इसी तरह की घटना अमृतसर में सिक्ख समुदाय द्वारा मुस्लिम महिलाओं के साथ की गई हैवानियत के रूप में सामने आई, जहां मुस्लिम महिलाओं को नग्न कर उनका मार्च निकाला गया तथा बलात्कार कर उन्हें जिंदा ही आग के हवाले कर दिया गया।

मार्च 1947 में रावलपिड़ी में सिक्ख महिलाओं को मुस्लिम भीड़ की हैवानिवायत का सामना करना पड़ा। बच्चों का अपहरण कर लिया गया तथा महिलाओं को सार्वजनिक रूप से बलात्कार किया गया। बहुत सी सिक्ख महिलाओं ने इस अमानवता के प्रकोप से बचने के लिए मौत को गले लगाना ज्यादा उचित समझा। विभाजन में जहाँ सरहदे बंटी वही महिलाओं को अपहरण कर धरों में कैद कर लिया गया, जो कि 1947–1949 के बीच हुई रिकवरी (वसूली) के समय सामने आई। पाकिस्तान से 6,000 हिंदू महिलाएं तथा भारत से लगभग 12,000 महिलाएं को प्राप्त किया गया। कुल मिलाकर लगभग 30,000 महिलाओं को घर वापसी के लिए पाया गया। साक्ष्यों से यह बात भी सामने आई कि कुछ हिंदू महिलाओं ने वापस भारत लौटने को मना कर दिया क्योंकि उन्हें यह संशय था कि उनके पिता व भाई समाज में सर नहीं उठा पाऐंगे क्योंकि वो अशुद्ध हो चुकी है।

भारतीय इतिहास विभिन्न धार्मिक सांस्कृतिक संघर्षों का इतिहास रहा हैं 1947 की विभाजन त्रास्दी, 1966 हिंदू सिक्ख दिल्ली दंगे, 1969 गुजरात 1974 वर्ली, 1980 मुरादाबाद, 1984 हिंदू सिक्ख दंगे, 1985 गुजरात, 1987 मेरठ, 1988 औरगांबाद व मुजफ्फरनगर, 1989 जम्मू दंगे, 1989 बम्मबई दंगे, 1989 बदायू, 1989 भागलपुर, 1989 कश्मीर, 1990 गुजरात, 1990 अयोध्या, 1992 बाबरी मस्जिद–कानुपर, असम, राजस्थान, कलकत्ता, भोपाल, दिल्ली, 2002 गुजरात, 2006 वडोदरा आदि। यह सूची जितनी लम्बी है, उससे ज्यादा लंबी है इन दंगों से जुड़ी हैवानियत की कहानियां, जिनमें पात्र बदलते गये लेकिन घटने वाली घटनाऐं लगभग वही थी– जहां एक संस्कृति के पुरुषों ने दूसरे संस्कृति को अपमानित करने के लिए उनकी महिलाओं को अपमानित करने का आसान जरिया खोजा उनका अपहरण करना, उनका बलात्कार करना था उन्हें नग्न कर सड़कों पर घुमाना।

बलात्कार दमनात्मक कार्यवाही के रूप में – स्त्री का अपहरण, बलात्कार को दमनात्मक कार्यवाही के संदर्भ में भी समझा जा सकता है। किसी परिवार, समूह, संस्कृति या अन्य धर्म व जाति को नीचा दिखाने या बदला लेने के लिए इस कार्यवाही को किया जाता है। देखा जाए तो लड़कों द्वारा दी जाने वाली गालियां आमतौर पर दूसरों की माँ या बहन के बलात्कार करने की धमकियां ही होती है। पितृसत्तात्मक समाज में नारी की इज्जत तथा नारी को दो परिवारों के सम्मान स्वरूप समझा जाता है (एक वह परिवार जहां वह जन्म लेती है तथा दूसरा जहां उसका विवाह होता है) ऐसे में किसी स्त्री को अपमानित कर उस पूरी संस्कृति से जुड़े लोगों का अपमान करने का प्रयास किया जाता है। उदाहरण के तौर पर फूलन देवी का सामूहिक बलात्कार यौनिक से अधिक जातिगत वर्चस्व को स्थापित करना था। दिन–प्रतिदिन ऐसे ढेरों उदाहरण मिल जाते है जहां दो पुरुषों या दो परिवारों ने आपसी रजिश में महिलाओं को बलात्कार किया हो। (उदाहरण स्वरूप 1979 में पाकिस्तान में मुख्तारन बीवी का बलात्कार इसलिए किया गया, क्योंकि उनके भाई में किसी भिन्न समुदाय की लड़की से विवाह किया था। इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने सभी 6 अभियुक्तों को बरी कर दिया था, क्योंकि वहाँ हनफी लॉ लागू था जिसमें बलात्कार के लिए पुरुष गवाही जरूरी है, जबकि मिलट्री कोर्ट ने मुख्तारन बीबी के पक्ष में 6 अभियुक्तों को मृत्यु दंड दिया था जिसे बाद में सुप्रीम कोर्ट ने बरी कर दिया।

अमरीकी राजनैतिक वैज्ञानिक सैमुअल पी. हटिगंटन ने अपनी पुस्तक द क्लैश ऑफ सिविलाइनजेशन एड द रिमेंगिग आफ वर्ल्ड आर्डर में बताया कि शीत युद्ध के बाद लोगों में संघर्ष का कारण सांस्कृतिक व धार्मिक पहचान होगी। दूसरे शब्दों में कहा कहा जा सकता है कि जहाँ पहला व दूसरा महायुद्ध औपनिवेशिक भूख का परिणाम था, वही यदि फिर से महायुद्ध हुआ था शीत युद्ध के बाद जो भी युद्ध होगा तो वह दो राज्यों के मध्य ना होकर दो संस्कृतियों तथा दो धर्मों के बीच होगा। विश्व की विभिन्न संस्कृतियों व उनमें भिन्नताओं व भेदों को विस्तार से इस लेख में वर्णित किया गया है। लेकिन यदि हम इतिहास में झांके तो जितने भी बड़े संघर्ष हुए वे सब सांस्कृतिक संघर्ष ही थे जिसमें बाद की विध्वसं कार्यवाहियों की मार अकसर महिलाओं को ही झेलनी पड़ती थी, या कहे झेलनी पड़ी है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

लेकिन दुनिया में बढ़ती हिंसा के साथ ही शांति व सुरक्षा कायम करने के लिए महिलाओं की भूमिका को पहचान देने तथा इस कार्याही में उनके प्रयोग को सशक्त करने की आवश्कता है, द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् स्थापित संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस ओर कदम बढाया है। जैसे पुलिस, सैन्य व अन्य क्षेत्रों में उन्हें तैनात किया गया। वर्ष 2020 में लगभग 95,000 शांति सैनिकों में से महिलाओं ने 4. 8% और गठित पुलिस इकाईयों का 10.9% शामिल थी। एक्शन फार पीस कीपिंग में भी उन्हें शामिल किया गया।

महिलाओं को इस प्रकार के उत्तरदायित्वों को निर्वहन करने के पीछे निम्न अधिकार को प्रस्तुत किया जा सकता है। जैसे (क) महिलाएं अन्य महिलायों तथा बच्चों के मध्य एक भावनात्मक जुड़ाव पैदा कर सकती है या दूसरे शब्दों में संवेदनशील आबादी में स्वयं को ज्यादा बेहतर प्रस्तुत कर सकती है जैसे बलात्कार व बच्चों के खिलाफ हिंसा का साक्षात्कार या अन्य कोई मदद एक महिला ही बेहतर तरीके से उपलब्ध करवा सकती है। (ख) महिलाऐं स्थानीय समुदायों के साथ विश्वास कायम कर उन्हें मदद प्राप्त करा सकती है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि जो महिला वर्ग अकयर किसी भी संघर्ष में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से शोषण का पात्र बन जाती है, उसी वर्ग का प्रयोग संघर्षों को कम करने, खत्म करने में भी किया भी कर सकती है तथा जो जो महिलाएं शोषण का शिकार हुई, उनके मित्र व सहायक बनकर उनमें पुनः आत्मविश्वास पैदा करने का काम कर सकती है।

संदर्भ

1. ए बिग्रेट, ए रेमेंड, (1997)., ओरिजन आफ सिविलाइजेशनः द प्रिहिस्ट्री एंड अरली आर्कियोलाजी ऑफ साऊथ एशिया, नई दिल्ली, वाइकिंग आइएसबीएन 978–0–070–87713–3

2. एलिशन, ग्राम., (2018) "द मिथ ऑफ द लिबरल आर्डरः फ्राम हिस्टोरिकल एक्सीडेंट टू कन्वेशनशल विसडम" फोरन अफैयर्स, वाल्यूम 97, नं. 4

3. ए. डेविड (1991), फेमिनः सोशल क्राइसिस एंड हिस्टोरिकल चेंज, विले ब्लैकवैल, आईएसबीएस– 978–631–15119–7

4. उपेन्द्र सिंह (2008)., ए हिस्ट्री आफ एंशेन्ट एंड अरली मिडिवल इंडियाः फ्राम द स्टोन ऐज टू द 12 सेंचुरी, पियर्सन आईएसबीएस 978–317–1120–0

5. सैमुअल, पी. हटिंगटन, (1993) द क्लैश ऑफ सिविलाइजेशन एंड द रिमेंकिंग आफ वर्ल्ड आर्डर, पेंगुइन रेंडम हाउस इंडिया, आईएसबीएन– 9780140267370

6. बार्ने, स्पनर., ( ) पार्टिशन, द स्टोरी ऑफ इंडियन इंडिपेंडनस एंड द क्रियेशन ऑफ पाकिस्तान, इन 1949, साइमन एंड स्कशटर पब्लिकेशन, आईएसबीएन 978–1471148033